वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मई – 2024

- भगवान देवात्मा के अमूल्य वचन
- सत्य धर्म की खोज और प्राप्ति
- देव समाज के मैम्बर बनकर उसे सफल कैसे किया जाए?
- विकास का क्रम चलता रहेगा।
- एक सौभाग्यशाली कोना
- एक परोपकारी साथी को समर्पित
- पेड़-पौधे आसपास के वातावरण से प्रभावित होते हैं उन्हें भी....
- बोस के एक सदी से भी पुराने शोध की पुष्टि हुई
- भगवान की स्तुति में
- मल्लेकां (सिरसा) में पति पत्नी व्रत
- भाव प्रकाश
- फोन के साथ नियम भी आवश्यक

भगवान देवात्मा के अमूल्य वचन

❖ कितने ही लोग शारीरिक बल, विद्या, धन और योग संस्थान आदि को प्राप्त करके किन्तु आत्मा के विचार से अन्धेरे में रहकर और नीच गतियों के दास होकर अपने नीच घमंड की प्रेरणा से झूठ मूठ अपने आपको किसी ऐसे व्यक्ति से बढ़िया समझते या प्रगट करते हैं कि जो उनकी अपेक्षा बेहतर आत्मिक जीवन रखता है।

❖ मनुष्यों के हाथ, पांव, मुंह और दिमाग़ औज़ार की न्याई हैं और उनमें नाना प्रकार के जो जो अनुराग या घृणा भाव वर्तमान हों, वही उनके मालिक या शासनकर्ता होते हैं और उनकी ऐसी नाना भाव शक्तियां ही उनसे नाना प्रकार की चिंताएं और क्रियाएं कराती हैं।

❖ सच्ची आज़ादी (अर्थात अपने शरीर, दिमाग़ और दिल आदि की रक्षा और उन्नति की पूरी आज़ादी) प्रत्येक मनुष्य का जन्म जात अधिकार है, सिवाए उस अवस्था के, कि जब वह अपनी किसी गति से किसी और अस्तित्व की वैसी ही सच्ची आज़ादी और अपनी सोसायटी और जाति के उचित अधिकार में विघ्नकारी न बनता हो, वह उस सच्ची आज़ादी के रखने या प्राप्त करने का अवश्य अधिकार रखता है।

❖ जब तक कोई व्यक्ति अपने अन्ध विश्वास के कारण किसी झूठ या बुराई का पक्षपाती है ओर उसे उस झूठ या बुराई के देखने के लिए जिस ज्योति की ज़रूरत है, उसके स्वीकार करने के वह योग्य नहीं, तब तक उसके सन्मुख तुम चाहे कैसी ही घटनाओं और ठीक तर्क के आधार पर उसके त्याग करने की अपील करो, वह सब व्यर्थ और निष्फल जाएगी।

❖ किसी भी मनुष्य के वश में नहीं है, कि वह नेचर की किसी भी सत्य बात को परीक्षा के आधार पर असत्य प्रमाणित कर सके।

❖ नेचर मनुष्य के विकास के सिलसिले में जो कुछ झूठ है उसे काल के साथ साथ नष्ट करती जा रही है। इसलिए जो लोग इस खोटे सिक्के (झूठ) का प्रयोग करते हैं, उनका अन्त में दिवालिया हो जाना अनिवार्य है।

❖ आत्मा के विषय में प्रत्येक सच्चाई का ज्ञान ही उच्चतम ज्ञान है, और ऐसी ही सच्चाई उच्चतम सच्चाई कहलाती है। ऐसी कोई सच्चाई जब प्रगट होती है, तब लाखों और करोड़ों लोग उसे देखने और स्वीकार करने की योग्यता नहीं रखते। किन्तु समय के साथ-साथ उनकी इस योग्यता का ज्यों ज्यों विकास होता जाता है त्यों त्यों वह सच्चाई उनके भीतर स्थान प्राप्त करती जाती है।

धर्म जीवन

खण्ड 35 अंक 4
मई – 2024
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

सत्य धर्म की खोज और प्राप्ति

सत्य ज्ञान सबके लिए एक होता है, और कल्पित और असत्य ज्ञान भिन्न भिन्न मनुष्यों के भिन्न भिन्न होते हैं। धर्म विषयक ज्ञान भी यदि भौतिकी, रसायन विज्ञान, कृषि विज्ञान, विद्युत विज्ञान और गणित विज्ञान की न्याई विज्ञानमूलक और परीक्षा मूलक हो तो वह ज्ञान भी मनुष्य मात्र के लिए एक ही हो सकता है अनेक प्रकार का नहीं। सैंकड़ों धर्म मत और उनमें एक दूसरे के विरोधी बातें होना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि विज्ञानमूलक धर्म के सिवाए सभी धर्म मतों में कल्पना का और अन्ध विश्वास का राज्य है। यहां तक की करोड़ों मनुष्यों का धर्म मत तो वही बन गया है जो उनके माता पिता और पूर्वजों का था। बुद्धि और तर्क का वहां कोई प्रश्न नहीं। एक ही धर्म मत में परस्पर विरोधी बातें देखकर भी अन्ध विश्वासी हृदय में क्या और क्यों के प्रश्न नहीं उठते। वह यह मानते ही नहीं कि उनका कोई विश्वास असत्य या मिथ्या हो सकता है। अब यह कैसे सम्भव हो सकता है कि परस्पर विरोधी मत सारे ही सत्य हों और जो धर्म या आत्मा को मानते ही नहीं वह भी सत्य हों। सच्चाई यह है कि सभी मत असत्य और मिथ्या हैं। उनके अनुयाई सारी आयु मिथ्या में पड़े रहकर सन्तुष्ट रहते हैं। हां अनेक जन कपटी बनकर यह जानते हुए भी कि उनका अमुक विश्वास निश्चय मिथ्या है, उसे ठीक प्रमाणित करना आवश्यक समझते हैं।

सत्य के पूर्ण अनुरागी का पथ सर्वदा भिन्न है। वह अपने आत्मा की रक्षा के लिए सत्य की उसी प्रकार आवश्यकता अनुभव करता है जिस प्रकार अपने शरीर के लिए श्वास की और वायु की। ऐसी अवस्था में जबकि सत्य के पूर्णांग अनुरागी भगवान देवात्मा केवल विश्वास के आधार पर किसी बात को सत्य मानकर ग्रहण नहीं कर सकते थे और दूसरी और धर्म ज्ञान की प्रबल स्पृहा (लालसा) थी, इसलिए उनके भीतर धर्म विषयक तत्व अनुसन्धान अनुराग विकसित हुआ, जिसकी कथा एक अलौकिक कथा है। भगवान देवात्मा के भीतर यह प्रश्न उठे – जो कि उठने आवश्यक थे :–

(1) इस पृथ्वी के नाना सम्प्रदाय जिस धर्म के नाम से परस्पर भिन्न भिन्न और कितनी ही बातों के विचार से पूर्णत: विरोधी शिक्षा देते हैं वह धर्म क्या है?

(2) मनुष्य के साथ धर्म का क्या सम्बन्ध है? क्या धर्म मनुष्य की किसी विशेष प्रकृति का नाम है? यदि ऐसा हो तो उसकी

विशेष प्रकृति क्या है? और वह किन किन बातों से पहचानी जाती है?

(3) धर्म जीवन किसी ऐसे आत्मा में क्योंकर उत्पन्न हो सकता है कि जो उनसे विहीन हो?

(4) आत्मा क्या है? क्या वह परिवर्तनशील है? मनुष्य आत्मा में उच्च वा नीच परिवर्तन क्योंकर होता है? क्या वह नेचर के नियमों के अनुसार होता है? यदि ऐसा है तो वह नियम क्या हैं? क्या नेचर के अटल नियमों के अनुसार धर्म और अधर्म विषयक शिक्षा नाना लोगों के लिए नाना प्रकार की और भिन्न भिन्न हो सकती है, वा मनुष्य मात्र के लिए एक ही प्रकार की?

(5) ईश्वर अनुप्राणन यह "ईलहाम" में क्या है? क्या वह प्राचीन काल में ही होता रहा है, या वह अब भी होता है? क्या वह प्रत्येक मनुष्य को हो सकता है? ईश्वर कृत पुस्तकों की असलियत क्या है?

(6) ईश्वर पूजा क्या है? उसकी क्यों जरूरत है? उससे क्या लाभ होता है? सच्ची और झूठी पूजा की पहचान क्या है?

(7) पाप क्या है, उसका मनुष्य के आत्मा से क्या सम्बन्ध है? उसमें उसकी किस प्रकार उत्पत्ति होती है?

(8) पाप से मोक्ष क्योंकर प्राप्त होती है?

(9) पुण्य वा शुभ कर्म क्या है? किसी आत्मा में उनकी उत्पत्ति किस प्रकार होती है?

(10) पाप और पुण्य कर्मों का फल कब, किस प्रकार और कहां मिलता है?

भगवान देवात्मा ने वैज्ञानिक विधि को आधार बनाकर और वर्षों लगातार घोर तप और त्याग करके जिस एक मात्र सत्य सार्वभौमिक, विज्ञानमूलक और सर्व कल्याणकारी धर्म की खोज की उसने उन्हें सब युगों का सर्वश्रेष्ठ और परम कल्याणकर्ता वैज्ञानिक बना दिया। उन्होंने धर्म विश्वासों और धर्म साधनों की सब काया पलट दी। उनकी शिक्षा में उपरोक्त प्रश्नों के जो उत्तर हैं वह अधिकारी और आकांक्षी जनों के लिए बहुत दिलचस्प, महा हितकर और अकाट्य हैं। उस धर्म के ज्ञान में मनुष्य की और मानवता की सभी समस्याओं का समाधान है। अधिकारी हृदय इस सत्य ज्ञान को पाकर विस्मित और धन्य धन्य हो जाता है।

सबसे पहले हम इसी प्रश्न को लेते हैं कि "पृथ्वी के नाना सम्प्रदाय जिस धर्म के नाम से परस्पर भिन्न और कितनी ही बातों के विचार से पूर्णत: विरोधी शिक्षा देते हैं, वह धर्म क्या है?"

इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले यह समझ लेना आवश्यक है कि करोड़ों मनुष्य जिन बातों को धर्म समझते हैं, उनका धर्म से कोई दूर का भी नाता नहीं यथा - शरीर पर कुछ चिन्ह धारण करना जैसे केस, किरपाण, चोटी, जनेऊ, तिलक और भगवां वस्त्र धारण करना, किसी नदी या सरोवर में स्नान करना, तीर्थ कहलाने वाले अनेक स्थानों की यात्रा करना, कल्पित ईश्वर या अन्य अनेक कल्पित देवी देवताओं पर विश्वास करना और उनकी मिथ्या पूजा करना, किसी ईश्वर रचित या 'इलहामी' पुस्तक या शास्त्र को मानकर उसके अनुसार अनेक कर्म कांड और संध्या हवन आदि करना, कोई जाप पाठ या कथा कीर्तन करना, योग समाधि के नाम से कोई क्रिया करना, ग्रंथ को कंठस्त करके हाफिज़ कहलाना। यह सब क्रियाएं करके भी

कोई नीच से नीच रह सकता है और बन सकता है। धर्म के नाम से ऐसी अनेक प्रकार की क्रियाएं करके भी लोग शराब और अन्य नशों का सेवन करते हैं, पशु वध और मांसाहार करते हैं, रिश्वत लेते और अनेक प्रकार से दूसरों के मन का अपहरण करते हैं, बहु विवाह और व्यभिचार करते हैं, साथी मनुष्यों की हत्या करते हैं और अन्य अनेक पाप करते हैं। सरकारी भूमि पर सर्वत्र कब्जा करके उस पर "धर्म स्थानों" का निर्माण करते और कथा कीर्तन करते हैं। और यह भी लोग भली भान्ति जानते हैं कि धर्म और पूजा के स्थानों में अपराधी और हत्यारे अपना अड्डा जमाए रखते हैं।

फिर इनमें से कोई भी पाप कोई न भी करता हो, पूर्ण शाकाहारी हो, नशों, मांसाहार, रिश्वत, व्यभिचार से मुक्त और ईमानदार हो तो भी वह जब तक स्वार्थी है और केवल अपने और परिवार के लिए जीता है तो भी वह धर्मवान नहीं। धर्म बहुत ऊंची और पवित्र वस्तु है।

धर्म मनुष्य के आत्मा में सात्विक शक्तियों या उच्च भावों से विकसित होने का नाम है। पहली प्रकार की सात्विक शक्तियाँ विशुद्ध परोपकार विषयक शक्तियां हैं। यदि कोई जन ऐसा हो कि जिसके आत्मा में अपने पारिवारिक या अन्य प्रिय जनों और सम्बन्धियों को छोड़ कर अन्य जनों के किसी दुख या अभाव या अज्ञान या बुरी नीति या प्रथा के दूर करने का भाव वर्तमान हो और वह भाव विशुद्ध भी हो अर्थात वह किसी का भला करके इस लोक या परलोक का कोई सुख या मान, उपाधि या मान आदि न चाहता हो - यहाँ तक कि धन्यवाद का शब्द भी न सुनना चाहता हो, और उस सेवा के काम के लिए अपना तन, मन, धन, अर्पण करता हो तो वह उसका विशुद्ध परोपकार भाव होगा। इसके बिना किसी के जीवन में धर्म का आरम्भ भी नहीं होता।

परन्तु ऐसा सात्विक भावधारी जन भी नशों और मांसाहार का सेवन कर सकता है, पति पत्नी के सम्बन्ध में बेवफा बन सकता है और नीच घृणाकारी और घमंडी रह सकता है, तथा अन्य अनेक सम्बन्धों में नीच गतियां कर सकता है। वह अनेक मिथ्या विश्वासों में ग्रस्त रह सकता है, पक्षपात कर सकता और अन्याय का साथ दे सकता है तथा अपने आत्मा के ज्ञान, आत्मा के मोक्ष और विकास और जीवन के लक्ष्य से पूर्ण रूप से अज्ञानी रह सकता है। इसलिए धर्म जीवन लाभ करने के लिए जो दूसरे प्रकार की सात्विक शक्तियां हैं वह ऐसे अद्वितीय आत्मा या देवात्मा से जोड़ने वाली शक्तियां या भाव हैं यथा - देवात्मा के प्रति सत्य और अटल विश्वास, अटल श्रद्धा, अटल कृतज्ञता और आकर्षण, जिन्हें प्राप्त होकर वह उनके देव प्रभावों को लाभ करके नीच जीवन से मोक्ष प्राप्त कर सकता है और उच्च या धर्म जीवन में विकसित हो सकता है।

देव धर्म विज्ञानमूलक धर्म है और विज्ञान में नियमों का पूर्ण समादर है। जैसे कोई फेफड़ों के बिना वायु को अपने भीतर नहीं ले जा सकता वैसे ही देवात्मा से श्रद्धा और सत्य विश्वास आदि के सूत्रों से जुड़ने के बिना कोई नीच जीवन से और सब नीच भावों से मोक्ष नहीं पा सकता और न ही विविध सम्बन्धों में सब उच्च भावों को विकसित करके उच्च गति मूलक सम्बन्ध स्थापन कर सकता है। देवात्मा वह आत्मा है जो मनुष्यात्माओं से ऊपर देव शक्तियों यथा सत्य और शुभ के लिए पूर्णांग प्रेम और मिथ्या और अशुभ के प्रति पूर्णांग घृणा शक्तियों और सब

सात्विक शक्तियों से विभूषित है। जो अधिकारी मनुष्यों को नीच जीवन से सत्य मोक्ष देने और उच्च जीवन में विकसित करने की पूर्ण सामर्थ्य रखते हैं और जो आत्मा के रूप, उसके रोगों, उसके पतन और उसके विनाश तथा विकास का सत्य और विज्ञानमूलक ज्ञान प्रदान करते हैं और यही ज्ञान सच्चे धर्म का ज्ञान है।

धर्म की खोज के महा दुर्गम और विकट क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले भी भगवान देवात्मा ने जो घोषणा की थी वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिशा की ओर संकेत था। उनकी घोषणा थी कि "तुम चाहे मूर्ख हो चाहे विद्वान, चाहे साकार वादी बहु देव पूजक हो और चाहे निराकार वादी एक देव पूजक। परन्तु तुम जब तक अपनी नीच वासनाओं और उत्तेजनाओं के दास और संसारासक्त हो, और "दुनिया परस्त" रहकर अपने भीतर मोह और पाप जीवन को बढ़ाते हो, तब तक तुम ईश्वर के मानने का इकरार करके भी सचमुच उसे नहीं मानते (उन दिनों भगवान देवात्मा अभी ईश्वर को मानते थे) जब तक तुम्हारे भीतर पाप का बोध जाग्रत न हो, और उससे पवित्रता और परोपकार आदि विषयक धर्म भावों के लिए अनुराग उत्पन्न न हो, तब तक जैसे मोह और पाप और उसके दुखों से तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता, वैसे ही इस देश का भी सच्चा और बड़ा हित नहीं हो सकता।"

वर्षों के तप और संग्राम के बाद भगवान देवात्मा ने धर्म की जो परिभाषा बताई उसका सौन्दर्य अपूर्व है यथा -

"विश्व का अंश होकर मनुष्य उसके नाना विभागों के सम्बन्ध में अपनी (1) अज्ञानता और (2) नाना वासनाओं (3) उत्तेजनाओं और (4) अहं शक्तियों का दास होकर जो जो नीच गति ग्रहण करता है; और उनके द्वारा उनकी हानि करने के भिन्न अपने आत्मा के रूप और बल को दिनों दिन क्षय करके जिस विनाश को प्राप्त होता है, उससे मोक्ष पाने, और जिन-जिन उच्च शक्तियों को लाभ करके वह उन विभागों के सम्बन्ध में अपने आत्मा के रूप और बल को विकसित और उनके साथ विकासकारी एकता स्थापन करने के योग्य बन सकता है उनकी प्राप्ति से उसमें जिस उच्च और महान जीवन की उत्पत्ति होती है, वही उच्च जीवन **सत्य धर्म** है।"

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

देव समाज के मैम्बर बनकर उसे सफल कैसे किया जाए?

हमारा महा सौभाग्य है कि हमें आठ मोटे - 2 पापों और मिथ्या छोड़कर गुरू महाराज की सेवकी का महा अधिकार मिला है। इस अधिकार को पाकर आम इन्सानों से हमारा जीवन भिन्न मार्ग पर पड़ गया है। हमारी सोच काफी हद तक वैज्ञानिक बन गई है। हमने नये नये शब्दों का प्रयोग करना भी सीख लिया है, जैसे बोध क्या होते हैं? नीच गति, उच्च गति क्या होती है? परिवर्तन का नियम क्या है? हमारा शरीर, हमारी बुद्धि, हमारी आत्मा हर चिन्ता वा क्रिया से बदल रहा है। आत्मा क्या होता है? सम्भव क्या है, असम्भव क्या है? आदि आदि।

हमें अच्छे वा बुरे वातावरण का भी कुछ बोध जाग्रत हुआ है। अच्छे अर्थात् देव प्रभावदायक मण्डल में बैठकर कुछ न कुछ अपनी कमियां वा ग़ल्तियां भी नज़र आ जाती हैं, कुछ सौभाग्यवान जन कुछ परिशोध करने के भी योग्य हो जाते हैं। परन्तु हैं तो हम मनुष्यात्मा, जिनकी हर चिन्ता वा क्रिया सुख अनुराग के अधीन है, हमें हमेशा अपनी परीक्षा करते रहने की आवश्यकता है :-

(1) हमारी एक प्रतिज्ञा धन सम्बन्धी ईमानदार रहने की भी है। क्या हम धन सम्बन्धी मामलों में पूर्ण ईमानदार हैं? धन को बचाने के लिए हेर फेर करके तरह - 2 के हथकण्डे तो नहीं अपनाते?

प्रश्न करें -

(2) क्या स्त्री पुरूष के सम्बन्ध में हम पूर्ण पवित्र हैं? हमारी निग़ाहें साफ हैं, स्त्रियां, बच्चियां हमारी अपवित्र चितवन या किसी क्रिया से अपमानित महसूस तो नहीं करतीं? मनुष्य की सूक्ष्म चिन्ताएं भी उसे अपवित्र कर देती हैं।

परीक्षा करें -

(3) हम किसी प्रलोभन में आकर, अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए दूसरों का नाजायज लाभ तो नहीं उठाते? बेशक स्वार्थ की प्रतिज्ञा हमारी प्रतिज्ञाओं में नहीं परन्तु ऐसी क्रियाएं और वह भी किसी सेवक के द्वारा हों, तो वह हमारी समाज के गौरव reputation को हानि अवश्य पहुँचाती है।

(4) हम अपने धर्म सम्बन्धियों को, जो एक ही गुरू के सेवक हैं, उनके प्रति ईर्ष्या तो नहीं रखते? हम अपने से सम्पन्न विद्वान वा अच्छी योगयताएं रखने वाले धर्म सम्बन्धियों को सम्मान देते हैं?

(5) क्या हम अच्छी योग्यता वा सम्पन्नता रखकर हमसे किसी पहलू में कमतर, परन्तु समाज के लिए, गुरू मिशन के लिए काम करने वालों को उचित सम्मान देते है?

प्रश्न करें -

(6) क्या हम अपनी बोली से, अक्खड़पन से किसी की रूह को घायल तो नहीं करते?

(7) क्या हम निन्दा चुगली, वह भी अपने धर्म के साथियों की करके अपने दिल को कठोर तो नहीं कर रहे?

प्रश्न करें -

(8) क्या कोई सेवा न करके, केवल अपने वा अपने परिवार के भिन्न किसी और के लिए कुछ न करके, देव समाज के गौरव को घटा तो नहीं रहे?

(9) क्या हमारे ग्रामवासी, हमारे निकटी सम्बन्धी छाती ठोककर यह शहादत दे सकते हैं कि यह देव समाजी है, यह बेईमानी नहीं करेगा, अपवित्रता की गतियां न करेगा, दूसरों के दुख दर्द को दूर करने का यत्न करेगा, इसकी गतियां,

इसकी बातचीत हितकर होगी?

जब कोई जन अपने उपकारी, वरिष्ठ समाज के कर्मचारी जिन्होंने अपनी जवानी और दुनियावी उच्च पदवियों को त्याग करके कई दर्जनों जनों के जीवनों में उच्च परिवर्तन किया हो। गुरू मिशन के प्रचार के लिए सब प्रकार के सुख आराम छोड़कर पैदल चलकर, कभी तपती गर्मी में गांवों गांवों में जाकर दु:ख उठाए हों, और कभी उफ न किया हो, जिसने समाज के भवन वा ईमारतें बनाने के लिए अपना सारा सुख आराम छोड़ा हो, ऐसे वरिष्ठ जनों की निन्दा करके, उनकी झूठी कमियां बताकर और फैलाकर समाज के गौरव को हानि पहुँचाकर और अपने आपको उनके मुकाबले में महान बताकर ऐसे जन क्या समाज वा गुरू मिशन की भलाई कर रहे हैं या उसके गौरव को घटाकर अपने अहं को तृप्त करते हैं? प्रश्न करें। ऐसे निन्दकों से भी सावधान रहें।

हम देव समाजी तभी अपने अद्वितीय गुरू और समाज के गौरव को बढ़ा सकते हैं, यदि उपरोक्त बातों की शहादत हमें अपने जीवनों से मिले, नहीं तो हम मुर्दा अथवा बेहोश सेवक हैं।

हां, यह सत्य है कि मनुष्य गल्तियों वा कमज़ोरियों का पुतला है। कभी न कभी वह अपनी सद् प्रतिज्ञाओं से किसी में गिर भी जाता है, तो उसे छुपाने के स्थान में वह किसी कौंसलर को लिखकर दे सकता है, उसका जो दण्ड कौंसल नियत करे, उसे पूरा करके वह अपने हृदय को पाक साफ कर सकता है और अपनी सेवकी के अधिकार को बनाए रख सकता है। कौंसलर का भी फर्ज़ है कि बिना नाम बताए उसकी गल्ती को कौंसल में रखकर उसको परिशोध के साधन बताए। फिर यदि उस जन को कभी ज़ोरदार प्रभाव मिलेंगे तो वह स्वयं अपनी गल्ती बताने का भी हौंसला कर सकता है।

समाज के गौरव को क़ायम रखने के लिए यह अति आवश्यक है। हम अपने-2 जीवनों पर विचार करें कि कहीं हम समाज के गौरव को घटाने वाले तो नहीं बन रहे?

-सुरजीत बराड़

विकास का क्रम चलता रहेगा।

नेचर परिवर्तनशील है, यह परिवर्तन दो प्रकार का है विकास और विनाश। विकास के क्रम में नई नई योग्यता लेकर महापुरुषों ने जन्म लिया, उनके द्वारा नाना पहलुओं में मानवता में कई गुणों का विकास हुआ और हो रहा है, कई प्रकार की बुराईयां गईं। दूसरी ओर विरासत में भरपूर नीच शक्तियां लेकर आतंकवादी भी पैदा हुए हैं और हो रहे हैं। बड़े-2 विद्वान पैदा हुए, जिन्होंने अपनी लेखनी से मानवता को निहाल कर दिया, परन्तु दूसरी ओर कुछ विद्वान और तीक्ष्ण बुद्धिवाले नीच जनों ने ऐसे ऐसे हथियार बना दिए जो तबाही मचा रहे हैं। उनकी लपेट में आकर लाखों लोग तबाह हो रहे हैं।

इस प्रकार जहां विनाश का नियम काम कर रहा है, वहां विकास का नियम भी निरन्तर काम कर रहा है। मनुष्य की बहुत गहरी सुख अनुरागी प्रकृति है जिससे विकास में बाधा पहुँचती है। विकास की रफ्तार धीमी भी हो जाती है। परन्तु यह विश्वास अटल है कि विकास का क्रम कभी रुकेगा नहीं।

प्यारे धर्म सम्बन्धियों! देवात्मा का आविर्भाव इसी विकास क्रम की ही देन है। देव समाज की स्थापना इसी विकास क्रम का ही एक भाग है इसलिए नेचर में गुरू के कारज का कारवां सदा चलता रहेगा, चाहे उसकी रफ्तार कितनी भी धीमी क्यों न हो। इसी विश्वास के साथ गुरू महाराज ने अपना मिशन किसी मनुष्य के हाथों में नहीं सौंपा, उन्होंने फरमाया था कि उनका मिशन विकास का अद्भुत कारनामा है और उन्होंने इसे किसी मनुष्य के हवाले नहीं छोड़ा, बल्कि विकास के नियम के अधीन ही छोड़ा है। देवात्मा गुरू ने समाज स्थापना में और उसे आगे बढ़ाने में जो तप और त्याग किए थे, वह वृथा नहीं जाएंगे। बहुत ही विरोधताओं के तुफानों से हमारे गुरू और हमारी प्यारी समाज गुजरी है और गुजर रही है, पर यह कारवां थमेगा नहीं :-

"हम न होंगे क्या हुआ, दुनिया तो देखेगी वह दिन,
सत्य धर्म के जब यहां झंडे झुलाए जाएंगे।"
लेकिन त्याग आपके जग को हिलाएंगे ज़रूर
आने वाले इनको पढ़कर तड़प जाएंगे ज़रूर
तहे दिल से आपकी महिमा को गाएंगे ज़रूर
भेंट तन मन धन वह अपना सब चढ़ाएंगे ज़रूर
आपके से होगा, इक नया पैदा जहां,
और पशाचत मिटकर होगा राज देवत का यहां"

विकास के क्रम में पैदा हुए इस मिशन को मिटाने की विरोधताओं की सीमा नहीं रही, वह सिलसिला अब भी चल रहा है। इस मिशन को हानि केवल बाहर वालों ने नहीं की, बल्कि अपनों के द्वारा भी बहुत हुई है और हो रही है। अपने आपको गुरू के बहुत श्रद्धावान समझने वाले जन भी अपनी निन्दा के द्वारा, दूसरों के काम करने पर उन्हें निर-उत्साहित करने के द्वारा हानि पहुँचाते रहे हैं, और पहुँचा रहे हैं। किसी ने अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए समाज को महा हानि पहुँचाई है, परन्तु फिर भी किसी कोने में सहकते हुए, आंसू बहाते हुए, समाज जिन्दा है और सदा जिन्दा रहेगी। अगर हम अपनी टूटी फूटी योग्यता के साथ (जैसे कि हम सब हैं) इसके काम को आगे बढ़ाएंगे तो हम विकास के साथी बनेंगे, विकास का साथी बनने से ही हमारा सबका विकास होता है।

विकास को दबाने वाले विरोधी आएंगे, परन्तु विकास अपनी धीमी मस्त चाल से उन्हें परास्त करता जाएगा। विरोधियों को लज्जित करता हुआ कारवां बढ़ता जाएगा। "विरोधी लाख मार्ग में खड़े हो, आखिर शिकस्त खाएंगे मुझको यकीन है।" मेरी यह कामना है कि हम सब एक होकर, अपने अहंकार, ईर्षा-द्वेष से ऊपर उठकर, अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर विकास के नियम के साथी बनें। यह लौ बुझने वाली नहीं है, परन्तु जो सौभाग्यवान जन इसमें अपनी वफादारी, अपनी कृतज्ञता, अपनी श्रद्धा का तेल डालते हुए इस लौ को जलाए रखेंगे, वह विकास के साथी बनकर विकास पाएंगे, नहीं तो जो हमारा हशर होगा, वह सामने है। जिन्हें ऐसे गुरू मिले ही नहीं, उन्हें तो मुआफी शायद थोड़ी बहुत मिल जाए, परन्तु हमें जिन्हें अद्वितीय गुरू मिल गए, अगर हम उसकी क़दर न करें, तो नेचर हमें कभी क्षमा नहीं करेगी। इस विकास के साथी बनकर हमने पाप छोड़े, मिथ्या छोड़ी, कुछ नेकी हासिल की, परन्तु अगली मंज़िल तक पहुँचने के लिए अपने जीवनों में और भी बेहतरी लाने और इस कारज को आगे बढ़ाने की हमारी बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है।

-सुरजीत बराड

एक सौभाग्यशाली कोना

5, 6, 7 अप्रैल को मल्लेकां (सिरसा में) पति पत्नी व्रत मनाया गया। दो दिन पहले ही सभाओं द्वारा सेवकों के हृदयों को इस विशेष प्रोग्राम के लिए तैयार किया गया था।

अफसोस कि कुछ विशेष कारण से मैं उसमें शामिल नहीं हो सकी। परन्तु वहां के हालात सेवकों के द्वारा जानकर मुझे वह नज़ारे जैसे जीवंत होकर सामने आ गए। इस नारकीय संसार में एक छोटा सा कोना, जहां देव प्रभावों द्वारा दिलों को हिलाने का नज़ारा, अपनी - 2 कमियों को महसूस करके क्षमा याचना का दृश्य, पति पत्नी द्वारा एक दूसरे के गुणों वा उपकारों को भरे दिल से वर्णन करने का नज़ारा, एक दूसरे के गले में हार डाल कर हाथ जोड़कर प्रणाम करने का स्वर्गीय नज़ारा, गुरू महाराज के कारज में अपनी अपनी योग्यता के अनुसार उनके पवित्र दरबार की नई पनीरी (सेवकों और नए प्रचारकों)द्वारा सभाएं और लैक्चर के दृश्य, जहां यह सब नज़ारे गुरू महाराज की महान कृपा वा सहायकारियों की अथाह सहायता से पैदा हुए, वहां गुरू महाराज द्वारा फरमाए हुए विकास के नियम पर अनेकों का अटूट विश्वास बढ़ा और जो इस कारज को हानि पहुँचाना चाहते हैं, उनके लिए भी एक चेतावनी बन कर आया।

हम सब मिलकर गुरू कारज की नई पौध को उत्साहित करें, उनकी उम्र देखकर निहत्साहित न करें। यह छोटा सा कोना कितना सौभाग्यवान है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। काश! इसी सहयोग से हमारे धर्म सम्बन्धी आगे बढ़ते रहें। निन्दा, चुगली से बचें, एक दूसरे के गुणों की सराहना करते रहें, सद्भाव बढ़ाएं। यही मेरी वा माननीय श्रीमान जी की शुभ कामना है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा नौजवानों से बहुत आशा रखते थे। मई 1880 में सेन्ट्रल ब्रह्मों समाज से अलग होकर जब उन्होंने नई समाज कायम की थी। उसमें उन्होंने 5 नौजवानों को दीक्षित किया था जिनमें एक उस समय के प्रसिद्ध लीडर लाला लाजपत राय साहिब थे। वह परम पूजनीय भगवान के लाहौर गवर्नमैंट स्कूल में उनके शिष्य भी रह चुके थे। दीक्षा की विधि समाप्त होने पर पूजनीय भगवान ने जो उपदेश दिया था, उसका कुछ भाग यह है :-

"ऐ नौजवानों! तुम सोचो कि आज इन सिद्धान्तों के विचार से तुम किस कदर ज़िम्मेवारी का बोझा उठा सकते हो। इस राह में तुम्हें बहुत से युद्ध करने पड़ेंगे। एक ओर दुनिया की प्यारी प्यारी चीज़ें और प्रलोभन तुम्हें इस ओर से हटाना चाहेंगे और दूसरी ओर तुम्हारे मूर्ख और कट्टर पक्षपाती देशवासी तुम्हें लान-तान करेंगे.... तुम निडर होकर सच्चाई का दीपक अपने हाथ में लिए अपने देश के अन्धकार को दूर करने की कोशिश करो .... स्वार्थ छोड़कर अपने भाईयों की भलाई में, अपने देशवासियों की बेहतरी में दिलोजान से लगे रहो। झूठ को सच्चाई के साथ, बुराई को भलाई के साथ, घृणा को प्यार के साथ विजय करके अपनी और अपने देश की और तमाम दुनिया की बेहतरी में जीवन व्यतीत करो।

आज की नौजवान पीढ़ी से भी भगवान को यही आशा है। इस आशा को पूरा करना आपके हाथ में है।

- सुरजीत बराड

एक परोपकारी साथी को समर्पित

परोपकार के जीवन के लिए प्रेरित करने वाला एक बहुत सुन्दर भजन है :-

मेरी यही तुच्छ सी हस्ती, किसी के काम आ जावे
मेरे जीवन की जो पूंजी, किसी के काम आ जावे।
मेरी विद्या, मेरी बुद्धि, किसी के काम आ जावे।
मेरा धन और सम्पत्ति किसी के काम आ जावे।
मेरे लासानी सत्गुरू ने दिखाया भेद यह मुझको,
है जीवन सफल बनता जो, किसी के काम आ जावे।

किसी भी भजन को गा लेने से किसी देव वाणी को सिर्फ लिख देने से ही जीवन नहीं बनता। परम पूजनीय भगवान ने धर्म का भेद हम पर प्रगट किया है कि जहां तक हम दूसरों के काम नहीं आते, दूसरों के दुख-दर्द नहीं देख सकते, उनके किसी सच्चे अभाव के निवारण करने में दिल नहीं ललचाता अथवा किसी उच्च कारज अथवा परोपकार अथवा किसी उच्च संस्था के लिए त्याग नहीं कर सकते तब तक हम अपने आपको धर्म मार्ग पर चलने वाले समझकर भी धोखे में ही रहते हैं।

गुरू महाराज की सेवकी के उच्च अधिकार को पाकर एक-एक धन के अनुरागी जन कैसे अपनी इस अनुचित गुलामी से मुक्ति पाकर, अपनी कजूंसी अथवा कृपणता की हालत से ऊपर उठकर अपने उसी प्यारे धन को त्याग करके और उसे अपनी व दूसरों की भलाई में लगाने वाले बन गए। ऐसे ही एक सम्मानीय सेवक अपनी इस प्रकार की ही हालत से निकलकर किस प्रकार धन का त्याग करने वाले, लोगों को मुफ्त दवाईयां देने वाले बन गए और दूसरों के लिए त्याग करने का स्रोत बन गए। यह सेवाकारी जन हमारे माननीय साथी सेवक श्रीमान डॉक्टर मुन्शा सिंह जी पदमपुर निवासी है। कोई आंख रखने वाला ही किसी परोपकारी की महिमा के देख सकता है और उससे प्रेरणा ले सकता है। उनकी इस महिमा को एक जन श्री दौलत सिंह जी ने कविता में प्रगट किया है :-

श्री दौलत सिंह जी के उद्‌गार

चाहे कहो वर्लड चाहे कहो जहान
जिस में है हमारा हिन्दुस्तान
उस में एक प्रांत है राजस्थान
जिसमें है एक जिला श्री गंगानगर का नाम
श्री गंगानगर में है एक पदमपुर स्थान
पदमपुर में रहता है एक फरिश्ता,
जिनका लोगों को नहीं है पता।
जो सर्दियों में बांटता है रजाईयाँ,
हर रोज़ लोगों को देता मुफ्त दवाईयां।
गरीबों, विधवाओं को देता है दान,
फिर भी नहीं चाहता अपना नाम।
मन चाहता है उनका करे सन्मान,
वो कहते ये सब करवाने वाले हैं श्री देवगुरू भगवान
कहते हैं यह सब है देव गुरू का दान,
बस! उन्हीं का सब करो सन्मान।
ये है डा० मुँशा सिंह जी सरदार
जिनको मिल गए श्रीमान बलदेव सिंह जी बराड़।
श्रीमान जी का सुन व्याख्यान,
बस फिर उन पर हो गए कुर्बान।
दान में दे दिया एक मकान।
डा० साहब पा रहे हैं आत्म-बोध
न किसी से ईर्ष्या, न करें किसी पर क्रोध।
उम्र हो गई है उनकी साल सतासी,
पुराने हैं ये चूनागढ़ निवासी।
नहीं है किसी से लेखा जोखा,
ना ये करे किसी से धोखा।

पेड़-पौधे आसपास के वातावरण से प्रभावित होते हैं, उन्हें भी भावनाओं की समझ होती है।

40 वर्ष पहले एक महिला अपने घर में लगे छोटे-से बगीचे की बहुत प्यार से देखभाल करती थी, वह पौधों से बातें करती थी। लेकिन जैसे ही उसकी मृत्यु हुई, पौधे सूखने लगे। दरअसल पेड़-पौधे भी आसपास के वातावरण से प्रभावित होते हैं। भारतीय वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बोस ने अपने यंत्र 'क्रेस्कोग्राफ' से पता लगाया था कि पेड़-पौधे भी आसपास के वातावरण को सुनकर प्रतिक्रिया देते हैं। इधर अमेरिका में एक प्रयोग हुआ, जिसमें एक जैसे दो पौधों को एक ही वातावरण में 10 दिनों तक रखा गया और समान धूप-पानी दिया गया। एक पौधे से लगातार प्यार से बातचीत की गई, वहीं दूसरे पौधे से गुस्से में बात की गई। जिस पौधे से प्यार से बातचीत की गई, उसकी वृद्धि सकारात्मक रही जबकि दूसरे पौधे की पत्तियाँ सूख गईं। भारत में भी ऐसा अनूठा प्रयोग किया गया है, जिसमें कुछ घरों को चिन्हित कर तुलसी के पौधे दिए गए और एक माह बाद पाया कि जिन घरों में कलह-क्लेश अधिक होते थे वहां तुलसी मुरझा गईं, बनिस्बत उन घरों के जहां प्रेम और शांति थी। जब आदि शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच शास्त्रार्थ हुआ था तो हार-जीत का निर्णय उनके गले में पड़ी फूलों की माला के मुरझा जाने से हुआ। दरअसल आपके हृदय से जैसे शब्द निकलते हैं, वैसा ही प्रभाव वे अपने आसपास के वातावरण में बिखेर देते हैं।

बोस के एक सदी से भी पुराने शोध की पुष्टि हुई

इज़राइल के वैज्ञानिकों की टीम पेड़-पौधों की खुशी और दर्द में निकली आवाज़ों को सुनने में सफल हुई है। यह शोध भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेता जगदीशचंद्र बोस के 105 वर्ष पुराने और दुनिया को चौंकाने वाले शोध की तसदीक है, जिसमें वनस्पतियों में संवेदना होने की बात कही गई थी। 'कष्ट में प्लांट्स से निकली आवाज़ें हवा में संदेश के रूप में हैं' शीर्षक इस नए शोध को विख्यात शोध-पत्रिका सेल ने छापा है। नए शोध में टमाटर और तम्बाकू के पौधों के पास अल्ट्रासोनिक यंत्र रखकर पाया गया कि पौधे पानी के अभाव में और क्षतिग्रस्त होने पर एक घंटे में कई दर्जन बार 20 से 100 किलोहर्ट्ज की फ्रीक्वेंसी पर आवाज़ करते हैं जिन्हें मनुष्य तो नहीं पर जानवर और पास के अन्य पौधे 10 से 16 फीट तक की दूरी से सुन लेते हैं। जानवर उसी अनुसार तय करता है कि इस प्लांट पर अंडे दे या यह अब कमज़ोर हो गया है। इन पौधों की रिकॉर्डिंग साउंड-प्रूफ चैम्बर में भी की गई और कोलाहल भरे ग्रीनहाउस चैम्बर में भी। शांत व खुशी के क्षणों में ये पौधे हर घंटे एक या दो आवाज़ करते हैं और (फूलों के तोड़ने से आहत भी नहीं होते), लेकिन आहत/अशांत/प्यासे होने पर बार-बार संदेश देते हैं। बोस और बाद के शोध में प्लांटस में कम्पन का पता तो चला था, लेकिन ध्वनि वाला यह शोध बिलकुल नया है और अगर इन साउंड के पैटर्न का पूरा अध्ययन हो सकेगा। तो मानव और पौधों के बीच संवाद भी सम्भव है। बहरहाल इस क्रांतिकारी शोध से आने वाले दिनों में किसानों को पौधों को कब पानी देना है या कौन कीड़ा पत्ते खा रहा है आदि बताया जा सकेगा। जगदीशचंद्र बोस ने सन् 1918 में ही बता दिया था, कि सभी प्लांट्स अपने वातावरण के प्रति संवेदनशील होते हैं।

भगवान की स्तुति में

परम पूजनीय श्री देवगुरू भगवन की स्तुति में ।

हे भगवन! कल्पित ईश्वर के विश्वासी कहते हैं कि ईश्वर सर्व शक्तिमान है, परन्तु न कोई ईश्वर है और इसलिए वह न सर्व शक्तिमान न अल्प शक्तिमान है।

हे सतगुरू! आप सर्वशक्तिमान बेशक नहीं हैं। न ही कोई हो सकता है। परन्तु आप देव शक्तिमान अवश्य हैं - सत्य और शुभ के पूर्ण अनुरागी और मिथ्या और अशुभ के पूर्ण शत्रु। आपकी इन देव शक्तियों से आपके भीतर देव ज्योति और देव तेज का विकास हुआ है। आपकी यह देव ज्योति अधिकारी मनुष्यों को आत्मा और सत्य धर्म का सत्य और विज्ञानमूलक ज्ञान देती है। सच्चा धर्म दर्शन, आत्म दर्शन कराती है, और धर्म के नाम से संसार में फैली सब प्रकार कि मिथ्याओं और मिथ्या विश्वासों का - जो नेचर के अटल नियमों और सत्य घटनाओं के विरुद्ध है और इसलिए विज्ञान के विरुद्ध है उनका हानिकारक रूप दिखाती है। आपकी ज्योति उच्च भावों, उच्च जीवन या धर्म जीवन का आकर्षणीय और सुन्दर रूप दिखाती है।

आपका देव तेज मृत प्राय: आत्माओं के लिए सच्चा अमृत है। जो आत्मा अधिकारी हैं, बचने की योग्यता रखते हैं, पूर्णत: अन्धे, कठोर और अयोग्य नहीं हो गए हैं और आपके देव प्रभावों को ग्रहण करते हैं उन्हें आप नव जीवन प्रदान करते हैं। उनके भीतर पापों के प्रति दूसरों के अधिकारों के अपहरण के प्रति उच्च घृणा उत्पन्न करते हैं। इतना ही नहीं उन्होंने पहले भी जिन जिन की जो जो हानि की है, उसके लिए उनके भीतर उच्च दुख उपजाते हैं और उनसे सच्चा प्रायश्चित या हानि परिशोध कराते हैं। पक्के बेईमान को आपने पक्का ईमानदार बनाया है और अनेकों से दूसरों का अपहरण किया हुआ धन और माल वापिस कराया है। एक - एक रिश्वतखोर को न केवल आपने इस पाप से मुक्त किया है बल्कि अनेकों से पहले ली हुई रिश्वत की बड़ी बड़ी रकमें वापिस भी कराई हैं। यहां तक कि पुलिस के एक एक अफ़सर ने गांव गांव पहुंच कर लोगों से क्षमा याचना करके रिश्वत का धन वापिस किया है। जो आत्मा नीच अनुरागों के भयानक दासत्व से उद्धार पाने की योग्यता रखते हैं उन्हें आप उनकी भयानक दासत्व से सत्य मोक्ष प्रदान करते हैं, सच्ची स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं। स्वार्थ के विष से सक्रांत आत्माओं के स्वार्थ को दूर करके उनको सेवाकारी और विशुद्ध परोपकारी बनाते हैं। सात्विक जीवन और परोपकारमय जीवन का गौरव प्रदान करते हैं। मोह के भयानक बन्धनों से निकाल कर और उनके मोह बन्धन जात दु:खों और निराशा को नष्ट करते हैं। जहां संसार में स्वार्थ और कृतघ्नता का ही बोल बाला है वहां आप मनुष्यों को कृतज्ञ और प्रति उपकारी बनाते हैं। घमंडियों को नम्र और कर्तव्य परायण बनाते हैं। कठोर और निर्दयी

आत्माओं को कोमल और दयालु बनाते हैं। इस प्रकार आप आत्माओं को सच्चा सौन्दर्य और मनुष्यत्व का सच्चा गौरव प्रदान करते हैं। उन्हें भरोसे के योग्य, वफ़ादार, आकर्षणीय और हितकर बनाते हैं। नीच भावों का विकास कर और उच्च भाव विकसित करके आप उनके नारकीय सम्बन्धों को स्वर्गीय बनाते हैं और विश्वगत सम्बन्धों में अनमेल को मिटा कर स्वर्गीय मेल लाते हैं। इस प्रकार उन्हें सच्चा सुख और सच्ची शान्ति प्रदान करते हैं।

आप सर्वज्ञानी बेशक नहीं हैं। न इस नेचर में कोई सर्वज्ञानी हो सकता है। परन्तु मनुष्य का आत्मा जो उसकी मुख्य वस्तु है, जिसको लेकर उसके जीवन की सारी लीला है, उसका पूरा और सच्चा ज्ञान आप प्रदान करते हैं - उसका गठन प्राप्त रूप, उसके पतन और उसके कारणों को दिखाते हैं। उन से रक्षा और मोक्ष पाने की विधि बताते हैं। आत्मा के बनने बिगड़ने का, उच्च और नीच परिवर्तन का, उच्च और नीच गतियों का सच्चा ज्ञान देते हैं। सात्विक भावों और उच्च भावों के रूप और उनके विकसित करने की विधि का ज्ञान भी आपकी ही देव ज्योति में प्राप्त होता है। आप जो ज्ञान देते हैं वह संसार का सबसे श्रेष्ठ ज्ञान है। इसलिए आप सर्वज्ञ और सर्वज्ञानी बेशक नहीं हैं - न कोई हो सकता है - परन्तु आप परमज्ञानी अवश्य हैं।

ईश्वर की परम दयालुता तो पूर्णत: मिथ्या और कल्पित है परन्तु आप सच्चे परम दयालु हैं। आपके देव हृदय में सारे जहान का दर्द है। आप मनुष्यात्माओं को पतन और विनाश की ओर जाता देखकर व्याकुल होते हैं और तड़पते हैं और उनके बचाने का घोर यत्न करते हैं। उन का पतन और विनाश की ओर जाना आप देख नहीं सकते, सहन नहीं कर सकते। मनुष्य तो मनुष्य आप पशुओं और पौधों यहां तक कि अजीवित वस्तुओं की हानि देखकर भी तड़प उठते हैं। एक एक पौधे को नोचा जाता देखकर आप ऐसा अनुभव करते हैं जैसे कोई आपके सिर के बाल नोच रहा है। अजीवित वस्तुओं तक की हानि भी आपको दुख से भर देती है। किसी भी अस्तित्व के नेचर प्रदत अधिकार का अपहरण आपके देव हृदय पर आघात लगाता है। तब आप जैसा परम दयालु और करुणा सिन्धु और कौन हो सकता है। आपकी परम दयालुता का सौंन्दर्य अवर्णनीय है।

जो जो अधिकारी आत्मा नीच गति और नीच जीवन से उद्धार पाने की योग्यता रखते हैं, उच्च गति में विकसित होने की ओर उच्च और धर्म जीवन और अमर जीवन पाने की योग्यता रखते हैं उन्हें आप उच्च जीवन प्रदान करते हैं। उन्हें नीच जीवन के भंवर से निकालते और पाप के भव सागर से पार करते हैं।

आप सच्चे उपास्य और सच्चे धर्मावतार हैं। आपकी स्तुति करना आपका ध्यान और चिन्तन करना, आपकी महिमा गाना हमारा परम सौभाग्य है।

- एक सेवक

मल्लेकां (सिरसा) में पति पत्नी व्रत

बहुत प्रसन्नता की बात है कि 5 अप्रैल से 7 अप्रैल तक मल्लेकां में देव समाज (G) साधन मन्दिर में पति पत्नी व्रत बहुत उत्साह पूर्वक मनाया गया।

उससे पहले ही लोकल धर्म सम्बन्धियों ने बहुत तैयारियां की हुई थीं। खाने-पीने आदि का प्रबन्ध बहुत अच्छा किया हुआ था। साफ सफाई, फूलों के नये पौधे, गमले, बिस्तरे, टैंट, जनरेटर, नया साउंड सिस्टम आदि की व्यवस्था साथी सेवकों ने बहुत सरगर्मी से की। इन सभाओं में शामिल होने के लिए चण्डीगढ़, हिसार, भटिंडा, गोनियाना, पटियाला, गंगानगर, पदमपुर, गजसिंहपुर, फख़रसर, केसूपुरा, मल्लेकां, ढाणी और नज़दीक के गांवों से भी काफी जन पहुँचकर लाभ उठाते रहे। 3 तारीख को ही श्रीमान बलबहादुर सिंह जी यहां पहुँच गए थे, 4 तारीख को गोपाल जी वा डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों पहुँच गए थे। सभाएं 3 अप्रैल की शाम को ही शुरू हो गई थी। 4 को भी दो सभाएं हुई, पांच अप्रैल को सुबह सभा हुई और 5 अप्रैल से विशेष सत्संग शुरू हुआ और उपरोक्त स्थानों से बहुत संख्या में धर्म सम्बन्धी वा श्रद्धावान पधारे। इन सभाओं में 70 से लेकर 125-130 तक संख्या हो जाती थी। भजनों का गान श्रीमान गुरूदेव राज जी बहुत सुन्दर आवाज़ में और धर्म सम्बन्धियों के साथ करते रहे। मण्डल इतना प्रभाव दायक बन जाता था कि बरबस बहुत से जनों के आंसू बह जाते थे और एक-2 सभा में कोई-कोई अपने भावों का प्रकाश भी करते रहे।

बहुत उच्च प्रेरणाएं प्राप्त करने व अपनी ओर ध्यान ले जाने का यह दुनिया का नायाब वातावरण देवात्मा गुरू के प्रभावों से ही सम्भव है।

5.4.2024, शाम 6.00 बजे।

पति पत्नी व्रत की प्रवेश सभा

सभापति : श्रीमान गोपाल कृष्ण जी

गुरू महाराज की सुन्दर छवि का फूलों का हार डालकर अर्चन कर प्रणाम का साधन किया गया। नवदीप जी व अलका जी ने गुरू महिमा का भजन गान किया। उसके बाद देव स्तोत्र का गान व व्याख्या की गई। इसके बाद श्रीमान गुरदेव राज जी ने एक गुरू महिमा के भजन का गान किया।

सभापति जी ने बहुत दीनता से अपने हालात बताकर विषय को शुरू किया कि हम मनुष्यों की शारीरिक गठन तो विकसित होते-होते पूर्ण हुई है, परन्तु आत्मिक गठन में बहुत अधूरापन है हमारे समाज में अनेकों धर्मों में जो मनुष्य की अथवा आत्मा की उपमा की गई है उसे सबसे श्रेष्ठ और ईश्वरीय रचना और देवत्व का शोला आदि बताया गया है, पन्तु उससे उल्ट मनुष्य अपने आप से, अपने स्वभाव से ही अन्जान है, बेहोश है। इसी बेहोशी में हम अपनी दुकानों में जर्दा, बीड़ी, सिगरेट आदि नशेदार सामान बेचते रहे थे। बिना होश के मैं स्वयं अपने पिताजी से तू-तड़ाक करता रहा। देव समाज के निराले वातावरण ने ऐसे अनेक व्यवहारों में बदलाव कर दिया, बेहोशी दूर की। उच्च वातावरण ने पिताजी के अन्दर के ईमानदार, सेवाकारी व

उनके दीनता के सुन्दर रूप को दिखाया। इसके बाद सभापति ने अपनी स्वाद वासना, काम वासना, अपवित्र दृष्टि के हालातों के बारे में दुखी हृदय से ब्यान करके देवात्मा की वाणी का हवाला देकर प्रकट किया कि दुनियां में अनेकों प्रचारक व कथावाचक होते हुए भी मनुष्य मात्र को नीच परिवर्तन से नहीं निकाल सकते। अत: देवात्मा का फरमान है कि - मेरे साथ जुड़कर, मेरे उच्च प्रभावों को पाकर जीवन को उच्च बनाओ।

6.4.2024, सभा : सुबह 9.00 बजे।

सभापति : श्रीमान राधेश्याम शर्मा जी।

गुरू छवि का अर्चन करने के बाद देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। प्रथम एक बच्ची ने "गुरू तेरी शरण बिना सब जन्म गंवादे जी।" भजन गाया उसके बाद श्रीमान गुरदेव राज जी ने "तारणहारे गुरू हमारे" भजन का गान किया।

सभापति जी ने गुरू चरणों में प्रार्थना के बाद बयान फरमाया कि गुरू महाराज का ज्ञान वास्तविक व्यवहारिक ज्ञान है उन्होंने शक्ति तत्व को बहुत विस्तार से बताया है कि मनुष्य को उसके अन्दर की भाव शक्तियाँ चलाती हैं चाहे वह उच्च हों अथवा नीच। इसके अलावा उन्होंने विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया कि विरासत अथवा जन्मजात पूँजी मिलने के बाद मनुष्य के इर्द गिर्द का वातावरण उसके जीवन व उसके भावों को परिवर्तित करके कैसे उसे अपने रूप में ढाल देता है। गुरू महाराज की नायाब शिक्षा के असरों से जब मनुष्यों के जीवनों में उच्चतम परिवर्तन हुए तब क्या रंगत पैदा हुई, इसका सुन्दर तरीके से वर्णन किया।

सभा के बाद सम्मान के योग्य मैडम सतिन्द्र ढिल्लों जी ने बहुत भावुक स्थिति में भाव प्रकाश किया। उन्होंने अपनी कमियों व उच्च भावों से विहीन अवस्था को बहुत महसूस करके रो-रो कर ब्यान किया। प्रोग्राम से पहले से चल रही सभाओं के लिए श्रीमान बलबहादुर सिंह जी का धन्यवाद किया, सभापति जी का धन्यवाद किया व सभी लोकल सेवाकारियों व हाजरीन को मुबारकबाद दी।

ऐसे भावभीने माहौल में सेविका रीटा रानी जी ने जब अपराध पश्चाताप विषयक भजन "कितने अवसर कितनी घड़ियाँ, कितना समय गुज़ार दिया।" का गान किया तो सारा मण्डल और भी भाव विभोर हो गया कई जन पाक अश्रुपात करते रहे।

दोपहर 3.00 बजे, लैक्चर

वक्ता : श्रीमान सरताज सिंह जी

विषय : पति पत्नी का पवित्र धार्मिक सम्बन्ध

श्रीमान गुरदेव राज जी द्वारा भजन गान "तेरे असरों से बाहर अगर जाएंगे, दिल के उच्च वलवले सारे मर जाऐंगे।" किया गया।

गुरू महाराज की सम्बन्धों की शिक्षा के बारे में वर्णन किया। दुराचार सम्बन्धी 8 प्रतिज्ञाओं के बारे में और "विवाहित जीवन" पुस्तक में से उच्च कर्तव्यों व संकल्पों का सुन्दर ब्यान फरमाया कि जो पति पत्नी के आपसी रिश्तों को टूटने अथवा बिखरने से बचाने के लिए बहुत कीमती हैं। उन्होंने कई विशेष तथ्यों की ओर ध्यान फेरा कि गृहस्थ जीवन अथवा परिवार में अपनों की तुलना किसी अन्य से करके अपनों को शर्मिन्दा नहीं करना चाहिए और न ही खुद शर्मिन्दा होना

चाहिए। आमतौर पर अपने जीवन साथी को हम सुन्दर और सुशील भी इसलिए चाहते हैं कि स्वयं की इज्जत बढ़े इसमें भी हमारी अपने जीवन साथी के प्रति सच्ची भले की भावना कम अथवा न के बराबर ही होती है। परिवारों में बच्चे ज्ञान को सुनकर नहीं बल्कि माता - पिता के अथवा बड़ों के व्यवहारों को देखकर भी बहुत कुछ संस्कार ग्रहण करते हैं अत: परिवारों में उच्च व्यवहारों की विशेष आवश्यकता को प्रकट किया।

इस वक्तव्य के बाद एक सेवक ने अपनी पत्नी के सम्बन्ध में अपने व्यवहार में और सुधार करने की ज़रूरत को महसूस करके ब्यान किया।

सभा : शाम 6.00 बजे

सभापति : श्रीमान राधेश्याम शर्मा जी।

श्रीमति रीटा जी ने "सत्संग से लगन लगाऐंगे ओर जीवन उच्च बनाऐंगे" भजन का गान किया।

सभापति जी ने अपने ब्यान में फरमाया कि दुनियां में जैसे प्रचलित धर्मों के अलग - अलग साधन हैं जैसे कि सिमरन करना, रतजगे करना, धूणी रमाना, पैदल तीर्थ यात्राएँ व अन्य अनेक कठिन से कठिन क्रियाएँ करना। इसी प्रकार देव समाज में 4 प्रकार के साधन हमारे लिए बहुत मुफीद हैं :- (1) साधन (2) सत्संग (3) सेवा और (4) सदभावना यानि शुभकामना का साधन।

इन विषयों पर बहुत विस्तारपूर्वक बताया गया। सच्चे प्रैक्टिकल साधनों के विषयों पर बताते हुए उन्होंने उदाहरण स्वरूप बताया कि किस प्रकार श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने एक बार लेट होने से ट्रेन छूट जाने पर उन्होंने करीब 15 - 20 दिनों तक रोजाना अपने बिस्तर व सामान आदि के साथ स्टेशन पर ट्रेन के समय से पहले पहुँचकर अपना हानि परिशोध का साधन किया।

सभापति जी ने अपनी पुरानी अवस्था 'पेड़ों की अनुचित रूप से टहनियाँ तोड़ना, दूसरों के खेतों में जाकर प्याज के पौधे व गन्नों को खराब करना आदि' वनस्पति जगत के सम्बन्ध में अपनी दुष्क्रियाएँ वर्णन की। इससे आगे उन्होंने कुछ अन्य सेवकों के भी उदाहरण देकर सच्चे सत्संग के अनेक लाभों का वर्णन किया।

7.4.20254, विशेष सभा : सुबह 9.00 बजे।

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

पति पत्नी के सम्बन्ध पर विशेष सभा।

श्रीमति रीटा जी ने "भगवान तुम्हारे चरणों में जिसे आने का अधिकार मिला" का गान किया। फिर एक भजन श्रीमान गुरदेव राज जी ने "सच्चे पति और पत्नी वह जो उच्च लक्ष्य रख मेल बढ़ावें" गाया।

सभापति जी ने पहले अपने जीवन में इस सम्बन्ध में आए परिवर्तन का वर्णन किया कि कैसे वह अपनी पत्नी का सम्मान और सत्कार करते हैं। उन्होंने दुनियादारी में अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया कि उच्च भावों के न होने से कहीं किसी कृत्घन पत्नी के व्यवहारों से पति पीड़ित होते हैं और कैसे कैसे पतियों द्वारा पत्नियों पर भी अन्याय और कहीं बहुत बुरे व्यवहारों द्वारा अत्याचार होते हैं। जैसे कि एक पत्नी ने जब एक अपना छोटा सा काम पति को करने के लिए कहा तो उनमें कलह - कलेश बढ़ गया, एक आँखों से अन्धे पति की जब समय

पाकर ईलाज से आंखों से दिखने लगा तो उस सेठ ने अपनी बहुत सेवाकारी व बेहद उपकारिणी पत्नी को त्यागकर दूसरी शादी कर ली। इसी तरह कैसे एक प्रिंसिपल पत्नी के हाथों उसका बहुत उपकारी पति भी अन्याय व अत्याचार सहता हुआ अपनी जान गंवा बैठा।

इसके बाद श्रीमान राधेश्याम जी ने श्री देवगुरू भगवान के गृहस्थ जीवन के उच्च आदर्शों को बहुत सुन्दर ढंग से पेश कर इस सम्बन्ध में उच्च भावों की महिमा का ब्यान किया।

भाव प्रकाश

श्रीमान राधेश्याम जी : श्रीमान जी ने भरे दिल से आंसुओं के साथ अपनी पत्नी द्वारा परिवार में भरसक सेवा व सहयोग का वर्णन किया व अपने मुकाबले अपनी धर्म-पत्नी की कई खूबियों का वर्णन किया।

श्रीमान सरताज जी : उन्होंने सर्वप्रथम 'आठ महान विभुतियाँ' पुस्तक का परिचय दिया व स्त्रियों के कई उच्च गुणों का ब्यान किया। उसके बाद उन्होंने अपनी पत्नी के कई गुणों का वर्णन किया। इसके बाद उनकी पत्नी श्रीमति दविन्द्र जी ने भी पति के गुणों का ब्यान किया।

श्रीमान गुरदेव राज जी : 'मेरी पत्नी जी बहुत शिष्टाचारी हैं। पहले एक दुर्घटना से उनके दोनों हाथ कलाई की जगह से टूट गए थे लेकिन बाद में अब तक वह बहुत मेहनत करती हैं। उस दुख की घड़ी में मेरी दो बहनों ने भी उनकी बहुत सेवा की थी।'

श्रीमान सुखदेव जोसन जी : इन्होंने अपनी पत्नी के कुछ गुणों, उनकी अनथक मेहनतों का व अपने द्वारा उचित मात्रा में इतना सन्मान न कर पाने का ब्यान किया।

श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी : "मैं अपनी पत्नी की माता के लिए भी कुछ त्याग किया करूँगा जो कि पहले नहीं करता था।"

श्रीमान हरदेव सिंह जी : अपने एक आप्रेशन में पत्नी की सेवाओं का वर्णन किया। पत्नी को एक बार थप्पड़ मार दिया था उसके लिए माफी माँगी व श्रीमान सरताज जी की सेवाओं को भी याद किया।

श्रीमान जागीर सिंह जी : 'सभाओं से बहुत फायदा हुआ है, नीच घृणा सामने आई है, मैं पत्नी से मांस पकवाता था, जुल्म करता था। अब भी जब-जब रोशनी मिलती है तो ठीक हो जाता हूँ, नहीं तो फिर पागल कुत्ते की तरह घर वालों को काटता हूँ।'

श्रीमति हरजिन्द्र कौर जी : "मेरे पति ने माँस खाया, नशे किए, बहुत दुखी होती थी, परन्तु गुरू महाराज ने बहुत परिवर्तन कर दिया। सभी इस दर से जुडें रहें और बरकतें हासिल करें।

श्रीमान सुन्दर लाल जी : "मैंने पत्नी को कभी वह सम्मान नहीं दिया, जितना इन्होंने मेरा साथ दिया है उसका मैं ब्यान भी नहीं कर सकता। इनकी बदौलत हम कोठियों वाले बने हैं, घर की बहुओं से भी इनका व्यवहार बहुत अच्छा है।" अपनी गलतियों के लिए माफी माँगी।

शिशपाल भट्टी : 'मैं देवसमाजी नहीं हूँ, पर यहाँ सुन करके काफी बदलाव आया है। मेरी

पत्नी बहुत काम करती है, मेरी बीमारी में बहुत सेवा की है। इन्होंने मेरी माता की आँखों का आप्रेशन कराया है। मैं भी आगे से इनका सम्मान किया करूँगा।'

बलदेव राज जी : 'मेरी पत्नी के भाव बहुत अच्छे हैं। मैं आलसी हूँ। सफाई आदि में मेरी पत्नी मुझे प्रेरणा देती है।'

श्रीमान बलदेव सिंह जी ढाणी : 'मेरी पत्नी जी बहुत सेवाकारी हैं। उन्होंने जरूरत पड़ने पर अन्जान राहगीरों के लिए भी रात में खाना बनाकर खिलाकर सेवा की है।'

राहुल भट्ठला जी (श्रद्धालु जन) : 'मैं बहुत गलत हूँ, पत्नी को सम्मान प्रदर्शन करने में भी शर्म महसूस कर रहा था। इनका मेरी जिन्दगी में बहुत योगदान है।'

श्रीमति अल्का जी (श्रद्धालु जन) : 'मेरे पति बहुत अच्छे स्वभाव के हैं यह मेरे सच्चे दोस्त हैं।'

श्रीमान अनिल जी : 'मेरी धर्म पत्नी रिश्तेदारों का सम्मान करती हैं, इनका स्वभाव ठीक है।'

श्रीमान गोपाल कृष्ण : 'हमारे पड़ौस में एक नशेड़ी ने अपनी माता को गुस्से में नाली में गिरा दिया मेरी पत्नी ने मुझे साथ लेकर, उसमें मदद की। रोजाना पंछियों व जानवरों को दाना डालना इनकी आदत है। इनकी आज तक कपड़ों-गहनों आदि की कोई डिमांड नहीं है। मेरे कर्जे में भी उसे उतारने के लिए इन्होंने अपनी मेहनत से (सिलाई करके) सहयोग दिया है।'

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने रीटा जी की अच्छी अवस्था पर मुबारक दी व सम्मान दिया।

प्रभदीप जी (श्रद्धालु जन) : 'यहां आकर बहुत अच्छा लगा, बहुत सम्मान मिला। मेरे पास धन्यवाद के लिए शब्द नहीं है।'

भाव प्रकाश करने के साथ-साथ ही गृहस्थी जोड़ों (पति-पत्नी) ने एक दूसरे के गले में फूलों का हार डालकर सम्मान प्रदर्शन किया, बहुत स्वर्गीय दृश्य उत्पन्न हो रहा था।

अन्त में सभी ने मिलकर देव आरती व जय ध्वनि का उच्चारण किया।

दान – प्रक्रिया

इस प्रकार के उच्च प्रेरणादायी वातावरण में आने वाले श्रद्धालुओं ने और विशेष रूप से धर्म सम्बन्धियों ने मिशन द्वारा सेवाओं को पाकर धन्यवाद सहित इसकी और बढ़ोत्तरी में अपने जिम्मेवारी को महसूस करके दिली भावों से दान किया।

इसमें श्रीमान राधेश्याम जी ने मल्लेकां मन्दिर के लिए 21,000/- रूपये दिए। श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी ने मन्दिर में नए बर्तन व भट्ठियों के लिए 9500/- रूपये दान किये। लंगर के निमित्त व अन्य प्रकार से भी सबने बहुत दिल खोलकर दान दिया जिसकी राशि करीब 35,000/- के करीब हुई। आगे के लिए मन्दिर में सहयोग हेतु श्रीमान मेहर सिंह जी के बेटे ने गद्दों का प्रबन्ध करवाने का व श्रीमान गुरदेव राज जी ने यात्रीयों के लिए नए कम्बलों आदि के प्रबन्ध का वायदा किया है।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

फोन के साथ नियम भी आवश्यक

बच्चों को फोन देना तो ज़रूरी है। लेकिन इस स्थिति में उसकी सुरक्षा और राह को तय करना भी तो आपकी ज़िम्मेदारी है।

आपको याद होगा कि आपको फोन तब दिया गया था जब आप घर से बाहर अपनी शिक्षा या रोज़गार के लिए निकले थे। ऐसा वर्तमान समय में नहीं है। अभी बहुत से किशोरवय बच्चों के पास फोन है और एक सोशल मीडिया अकाउंट वह भी तब, जब उन्हें न तो इंटरनेट की दुनिया की सही तरह से समझ होती है और न ही वे इसके ख़तरों को जानते हैं। हलांकि बहुत से मामलों में उन्हें फोन देना ज़रूरी भी हो जाता है क्योंकि ये उनकी शिक्षा के लिहाज़ से भी महत्त्वपूर्ण है। इस स्थिति में बच्चे फोन का सही इस्तेमाल करें ये आपकी जिम्मेदारी हैं इसके लिए आप कुछ नियम बनाकर इससे सुनिश्चित करें।

नियम 1 : बच्चे के फोन का चार्जर उसके कमरे में नहीं जाएगा। उसका फोन हमेशा घर की व्यस्त रहने वाली जगह पर ही चार्ज होगा जैसे रसोईघर या हॉल में। इससे वे फोन को चार्जिंग में लगाए हुए इस्तेमाल न करें, इसकी आप निगरानी कर पाऐंगे।

नियम 2 : घर में सबके साथ बैठकर खाना खाते समय फोन का इस्तेमाल करने की मनाही रखें। इससे होगा कि बच्चे न सिर्फ खाने पर पूरा ध्यान केंद्रित करेंगे बल्कि आपके साथ अच्छा समय भी गुज़ारेंगे।

नियम 3 : अगर बच्चे का किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कोई अकाउंट है तो उसे माता – पिता को भी फ्रेंड लिस्ट में रखना/फॉलो करना होगा। इसके अलावा आप भी उसे फॉलो करें। साथ ही आपका बच्चा जिन लोगों को फॉलो कर रहा है हो सके तो आप भी उन्हें फॉलो कर लें। इससे आपको पता रहेगा कि वह कैसा कंटेंट देख रहा है या सीख रहा है और उसके दोस्त कैसे हैं।

नियम 4 : बच्चे के फोन में किसी भी तरह का कोई पासवर्ड नहीं होगा। और होगा भी तो घर वालों को वह पासवर्ड पता होगा। इससे उसे इस बात का हमेशा ख़याल रहेगा कि उसका फोन कभी भी देखा जा सकता है। इस डर से वह उसे सही तरह से ही इस्तेमाल करेगा/करेगी।

नियम 5 : बेडरूम में फोन ले जाने की अनुमति नहीं होगी। इससे बच्चे रात में फोन चलाने के बजाए जल्दी सोने की कोशिश करेंगे। साथ ही ग़लत कंटेंट को भी नहीं देख पाएंगे।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts